अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - ''मैत्रेयी पुष्पा का व्यक्तित्व एवं कृतित'' पृ. 1 - 16

प्रस्तावना

1.1 *मैत्रेयी पुष्पा का जीवन परिचय*

1.1.1 जन्म तथा जन्म स्थान

1.1.2 पिता

1.1.3 माता

1.1.4 बचपन

1.1.5 शिक्षा

1.1.6 लालनपालन

1.1.7 विवाह

1.1.8 वैवाहिक जीवन

1.1.9 संतान

1.1.10 लेखन की प्रेरणा

1.2 *व्यक्तित्व*

1.2.1 बाह्य व्यक्तित्व

1.2.1.1 रंगरूप

1.2.1.2 वेशभूषा

1.2.1.3 शौक

1.2.1.4 इच्छाएँ

1.2.1.5 आकर्षण

1.2.1.6 महत्त्वपूर्ण घटना

1.2.1.7 महत्त्वपूर्ण विचार

1.2.1.8 स्वभाव

1.2.2 अंतरंग व्यक्तित्व

1.3 मैत्रेयी पुष्पा का कृतित्व

अ. उपन्यास

ब. कहानी

क. आत्मकथा

1.3.1 उपन्यासकार मैत्रेयी

1.3.2 कहानीकार मैत्रेयी

1.3.3 आत्मकथाकार मैत्रेयी

1.3.4 आधुनिक लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा का स्थान

1.4 पुरस्कार एवं सम्मान

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - ‘‘विज़न उपन्यास का तात्विक विवेचन’’ पृ. 17- 65

प्रस्तावना

2.1 विज़न उपन्यास का तात्विक विवेचन

2.2 कथानक (कथावस्तु)

2.3 पात्र तथा चरित्र-चित्रण

2.3.1 विज़न उपन्यास के प्रमुख पुरुष पात्र

2.3.1.1 डॉ. आर. पी. शरण

2.3.1.2 डॉ. अजय

2.3.1.3 डॉ. मुकुल

2.3.1.4 डॉ. आलोक

2.3.1.5 डॉ. गौरव

2.3.1.6 डॉ. चक्रवर्ती

2.3.1.7 डॉ. चोपडा

2.3.1.8 नेहा के पिता भटनागर

2.3.1.9 आभा के पिता ब्रजेशचंद्र द्विवेदी

2.3.1.10 फौजी

2.3.1.11 डॉ. अनुज वर्मा

2.3.1.12 डॉ. आकाश

2.3.1.13 डॉ. बरनवाल

2.3.1.14 डॉ. प्रकाश अग्रवाल

2.3.2 'विज़न' उपन्यास के स्त्री पात्र

2.3.2.1 डॉ. नेहा

2.3.2.2 डॉ. आभा

2.3.2.3 नेहा की माँ

2.3.2.4 आभा की माँ

2.3.2.5 मुकुल की माँ

2.3.2.6 अजय की माँ

2.3.2.7 सरोज

2.4 कथोपकथन अथवा संवाद

2.4.1 भावात्मक संवाद

2.4.2 आवेशात्मक संवाद

2.4.3 नाटकीय संवाद

2.4.4 उपदेशात्मक संवाद

2.4.5 मार्मिक संवाद

2.5 देशकाल वातावरण

2.5.1 बाह्य वातावरण

2.5.2 आंतरिक वातावरण

2.6 भाषाशैली

2.6.1 भाषा

2.6.1.1 शब्द प्रयोग के विभिन्न रूप

I. तत्सम् शब्द

II. तद्भव शब्द

III. देशज शब्द

IV. विदेशी शब्द

क. अरबी शब्द

ख फारसी शब्द

ग अंग्रेजी शब्द

घ अंग्रेजी वाक्य

ड पर्यायी हिंदी शब्द

च पर्यायी हिंदी वाक्य

V. अन्य शब्द

प द्विरूक्त शब्द

फ संयुक्त शब्द

ब अपशब्द

VI. मुहावरें

VII. कहावतें

VIII. सूक्तियाँ

2.6.2 शैली

2.6.2.1 वर्णनात्मक शैली

2.6.2.2 नाटकीय शैली

2.6.2.3 आत्मकथात्मक शैली

2.6.2.4 चेतनाप्रवाह शैली

2.6.2.5 पत्रात्मक शैली

2.6.2.6 फ्लैश बैक शैली

2.7 उद्देश्य

शीर्षक

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय - ''विज़ठ में नारी चित्रण'' पृ. 66 - 92

3.1 नारी का महत्त्व

3.2 नारी के विविध रूप

3.2.1 नारी के पारिवारिक रूप

3.2.1.1 माता

3.2.1.2 कन्या

3.2.1.3 पत्नी

3.2.1.4 सास

3.2.2 नारी के अन्य रूप

3.2.2.1 सहेली / सखी

3.2.2.2 डॉक्टर

3.2.2.3 परित्यक्ता

3.2.3 नारी के शाश्वत रूप

3.2.3.1 साहसी एवं स्वाभिमानी

3.2.3.2 सुसंस्कारित एवं सहनशील

3.2.3.3 आधुनिक तथा विद्रोही

3.2.3.4 शोषित / पीड़ित

3.2.3.5 आज्ञाकारी

3.2.3.6 त्यागमयी

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - ''विज़न में चित्रित चिकित्सा क्षेत्र का भ्रष्टाचार''
पृ. 93 - 113

4.1 ***भ्रष्टाचार का स्वरूप***

4.2 ***विज़न में चित्रित चिकित्सा क्षेत्र का भ्रष्टाचार***

4.2.1 रिश्वतखोरी

4.2.2 नियुक्ति में भ्रष्टाचार

4.2.3 भ्रष्ट न्याय व्यवस्था

4.2.4 मरीजों के साथ लापरवाही

4.2.5 कनिष्ठों का शोषण

4.2.6 आईबैंक्स का भ्रष्टाचार

4.2.7 लेंस का भ्रष्टाचार

4.2.8 आपसी साँठ-गाँठ तथा कमिशन निश्चिति

4.2.9 स्वार्थ हेतु दोहरी भूमिका

4.2.10 प्रायवेट अस्पताल का भ्रष्टाचार

4.2.11 सरकारी अस्पताल का भ्रष्टाचार

निष्कर्ष

पंचम अध्याय - ''विज़न उपन्यास में चित्रित समस्याएँ'' पृ. 114 - 133

5.1 ***प्रस्तावना***

5.1.1 'विज़न' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ

5.1.2 जातिवाद की समस्या

5.1.3 मकान की समस्या

5.1.4 वृद्धों की समस्या

5.1.5 बलात्कार की समस्या

5.1.6 तलाक की समस्या

5.1.7 नौकरी की समस्या

5.1.8 व्यसनाधीनता की समस्या

5.1.9 मानवता की समस्या

5.1.10 न्यायव्यवस्था की समस्या

5.1.11 शोषण की समस्या

5.1.12 विवाह की समस्या

5.1.13 प्रेमविवाह की समस्या

5.1.14 परित्यक्ता नारी की समस्या

5.1.15 नौकरीपेशा नारी की समस्या

5.1.16 अकेलेपन की समस्या

5.1.17 पाश्चात्य प्रभाव की समस्या

5.1.18 ब्रेन-ड्रेन की समस्या

5.1.19 पुरुषप्रधान संस्कृति की समस्या

5.1.20 डॉक्टरों के मूल्य विघटन की समस्या

5.1.21 आर्थिक विपन्नता की समस्या

5.1.22 घुटन की समस्या

निष्कर्ष

उपसंहार पृ. 134 - 141

संदर्भ ग्रंथ सूची पृ. 142 - 144